संगठन में ही ताकत है, अकेले रहकर कोई लड़ाई जीती नहीं जा सकती।

jhr

मेरा नाम रीतु है, मैं मदनपुर खादर जे.जे. कॉलोनी में अपने परिवार के साथ रहती हूं। मैं इस समय बी.ए. में पढ़ रही हूं। जागोरी के साथ मैं वर्ष 2007–8 में जुड़ी थी। तब मेरी उम्र 11 साल की थी। मैं तब जागोरी के किशोरी समूह (शक्ति समूह) से जुड़ी हुई थी, और यहां की लाइब्रेरी की किताबों को पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगता था। मैं किशोरी समूह की हर साप्ताहिक मीटिंग और ट्रेनिंग में शामिल होती थी। मैंने यहां जेंडर भेदभाव, आत्मरक्षा, शिक्षा, महिला हिंसा, सूचना का अधिकार, तथा अन्य कानूनों से जुड़ी जानकारियां हासिल कीं।

मुझे शुरू से ही समूह में जुड़कर काम करना और सीखना अच्छा लगता था। मुझे दीवार पत्रिका बनाना, उसे सजाना और अभियानों में जुड़ना बहुत पसंद था। पहले किशोरियों के साथ ही मीटिंग होती थी, लेकिन बाद में किशोरों के साथ होने वाली चर्चाओं और मीटिंगों व ट्रेनिंगों में हमें शामिल होने का मौका मिला। इससे हमारे भीतर लड़कों के प्रति झिझक और डर खत्म हुआ, हम उनके साथ भी मिलकर बातें करने और अभियानों में जुड़ने लगे, दोस्तों की तरह हो गए, अब हमें उनसे डर नहीं बल्कि बराबरी और दोस्ती का अहसास होता है।

जागोरी की मीटिंगों से मैं जो भी जानकारी प्राप्त करती थी, उसे अपनी घर में मम्मी और बहनों और आसपास के लोगों को बताती थी। बाद में मैं युवा समूह की मासिक स्वैच्छिक समूह मीटिंगों और ट्रेनिंगों में भी शामिल होने लगी, जिसमें मैंने सेफ़्टी ऑडिट करना, रेडियो प्रोग्राम तैयार करना, रेडियो पर बात करना, सीखा। बड़े होकर हम दीवार पत्रिका का रूप–रंग, डिज़ाइन, चित्रकला और साज–सज्जा खुद तैयार करते थे। हमें आज तक लगता है कि वह हमारी पत्रिका थी जिसमें हम सब लड़कियां अपने मन की बात और समस्याओं को समुदाय तक पहुंचा सकते थे। इस तरह जागोरी के साथ मेरी उम्र का भी एक जुड़ाव रहा है।

मैंने जागोरी में फ़ैलोशिप के माध्यम से 9 मई 2012 को काम करना शुरू किया था और तब से आज तक कर रही हूं। मैं 4 घंटे का समय योगदान देती हूं और उससे मिलने वाले मानदेय (रु. 2500/–) से अपनी पढ़ाई का खर्च उठाती हूं। हम पांच बहनें और एक भाई हैं। पिता मज़दूरी करते हैं और मां भी; इसलिए अपनी पढ़ाई का खर्च खुद उठाती हूं।

एक फ़ैलो के रूप में भी मेरा सफ़र अलग–अलग अनुभवों से सजा हुआ है। पहले मैं हर ब्लॉक में लड़कियों से घर–घर जाकर संपर्क करती थी और उन्हें जागोरी तथा उसके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के बारे में जानकारी देती थी और उन्हें किशोरी समूह से जोड़ती थी। लड़कियों के साथ गली मीटिंग करना, उनकी समस्याओं के बारे में चर्चा करना, उन्हें विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों, अभियानों के बारे में जानकारी देना मेरा काम था। मैंने फ़ैलो के रूप में किशोर और किशोरी दोनों समूहों के साथ काम किया है। मैं एन.जी.ओ. नेटवर्क की मीटिंगों में भी जुड़ती हूं, जिससे मुझे बहुत सी राजनैतिक और सामाजिक मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। इन जानकारियों का हम अपने काम में इस्तेमाल करते हैं और लोगों को इनके बारे में बताते हैं। आज मैं किशोर–किशोरी समूह के साथ–साथ युवा समूह और महिला समूह के साथ जुड़ाव और संपर्क में भी सहयोग करती हूं और आगे भी करती रहूंगी।

किशोरों और किशोरियों के साथ काम करना मेरे लिए बहुत सुखद अनुभव रहा है, मगर इसके दौरान बहुत सी चुनौतियां भी मेरे सामने आती रहीं। पहले तो मेरा कद ही, मेरे छोटे कद और दुबलेपन के कारण फ़ील्ड में लोग मुझे बच्चा समझ कर ही व्यवहार करते थे। जब मैं शुरूआती दौर में काम कर रही थी तो मुझे लगता था कि लड़कियां जुड़ेंगी या नहीं, ऑफ़िस तक आएंगी या नहीं, परंतु मैं किशोरियों को अपना उदाहरण देती थी और उन्हें समझाती थी कि जागोरी से जुड़कर उन्हें किस तरह का लाभ होगा! मेरी बातों को समझकर वे जुड़ने के लिए तैयार हो जाती थीं। फिर भी उन्हें मीटिंग के लिए बार–बार याद दिलाना पड़ता था, यह भी सबसे बड़ी चुनौती थी। उनके जुड़ाव को कायम रखना भी किसी चुनौती से कम नहीं है। अगर किसी वर्कशॉप या मीटिंग के लिए जाना हो तो किशोरियों के माता–पिता से बातचीत करना मेरे लिए बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी और चुनौती थी। अब मैं किशोरियों व महिलाओं को कन्विंस करना सीख गई हूं।

फ़ील्ड में संपर्क करने के दौरान लोगों और लड़कों के कमेंट सुनना हमें बहुत बुरा लगता था, परंतु पहले तो उन्हें इग्नोर कर देते थे, कभी सबके सामने डांट देते थे और अगर फिर भी बाज़ नहीं आए तो उनकी शिकायत संस्था में कर देते, इस तरह धीरे–धीरे ऐसे हालातों से निपटना भी हमने सीख लिया है, काम के अनुभवों और जागोरी से मिलने वाली जानकारियों से हमने बहुत सी रणनीतियां सीखी हैं जो आज फ़ील्ड के काम में हमारे काम आ रही हैं।

आज जब मैं खुद को आइने में देखती हूं तो पाती हूं कि जागोरी से जुड़ने के बाद कितना मुझमें बदलाव आ गया है! आज मैं बेझिझक बोलना सीख गई हूं, कहीं भी अकेले आ–जा सकती हूं, अब मुझे किसी से डर भी नहीं लगता, लोगों को समझाना और गलत होते देख उसके खिलाफ़ आवाज़ उठाना मैंने सीख लिया है। अपने अधिकारों की मांग करना, दूसरों की बातों को महत्व देना, उनकी मदद करना व उन्हें समझना, खुद अपने को परखना अपनी कमियों को पहचानना और बदलना सीख लिया है मैंने। मुझे पुलिस–कचहरी से डर का सामना करना व लोगों को थाने तक ले जाकर उनको कानूनी मदद लेने में सहयोग करना भी आ गया है, पर अभी भी बहुत कुछ सीखना और समझना बाकी है क्योंकि यह तो एक अंतहीन यात्रा है। जितना सीखेंगे उतना आगे बढ़ेंगे। इसलिए जो भी जागोरी से सीखती हूं, समुदाय में लागों के बीच बांटती हूं और आगे भी यही प्रयास करती रहूंगी, दूसरों से जुडूंगी और जोड़ती रहूंगी।